اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत एतिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाखि़ले मस्जिद हों, याद कर के एतिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, एतिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिए ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्त़ारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर एतिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें जाइज़ हो जाएंगी । एतिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है : अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो एतिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (यानी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आखि़री नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : یَا اَیُّھَا النَّاسُ اِنَّ اَنْجَاکُمْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مِنْ اَھْوَالِھَا وَ مَوَاطِنِھَا اَکْثَرُکُمْ عَلَیَّ صَلَاۃً فِیْ دَارِ الدُّنْیَا ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...فردوس الاخبار، ج۲ / ۴۷۱، حدیث ۸۲۱۰

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''اَفْضَلُ الْعَمَلِ اَلنِّيَّةُ الصَّادِقَةُ'' सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।[1]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर काम से पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आ़दत बनाइए कि अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है। बयान सुनने से पेहले भी अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिए। मसलन निय्यत कीजिए : ❖ इ़ल्म सीखने के लिए पूरा बयान सुनूंगा। ❖ बा अदब बैठूंगा। ❖ दौराने बयान सुस्ती से बचूंगा। ❖ अपनी इस्लाह़ के लिए बयान सुनूंगा। ❖ जो सुनूंगा, दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ादारों का मह़ल्ला

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े वलिय्युल्लाह हैं, दीगर औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की त़रह़ आप भी नफ़्स कुशी (यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचने) के लिए बहुत मेह़नत किया करते थे। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब ''**फ़ैज़ाने रमज़ान**'' में लिखते हैं : ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने (नफ़्स की ख़्वाहिश से बचने के लिए) 40 साल के दौरान कभी खजूर नहीं खाई। 40 साल के बाद आप को जब खजूर खाने की ख़ूब ख़्वाहिश हुई, तो आप ने नफ़्स कुशी (यानी इस ख़्वाहिश का ज़ोर तोड़ने) के लिए मुसल्सल एक हफ़्ते रोज़े रखे फिर खजूरें ख़रीद के दिन के वक़्त बसरा शरीफ़ के एक मह़ल्ले की मस्जिद में दाख़िल हुवे, अभी खाने के लिए खजूरें निकाली ही थीं कि एक बच्चा चिल्ला उठा : अब्बाजान ! मस्जिद में ग़ैर मुस्लिम आ गया। बच्चे के वालिद ने येह सुना,

1...جامع صغیر، صفحہ:۸۱، حدیث:۱۲۸۴

तो हाथ में डन्डा लिए दौड़े आए लेकिन जब ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْه को देखा, तो पेहचान गए और मुआ़फ़ी मांगते हुवे अ़र्ज़ किया : हु़ज़ूर ! बात दर अस्ल येह है कि हमारे मह़ल्ले में सारे मुसलमान रोज़ा रखते हैं, ग़ैर मुस्लिमों के इ़लावा यहां दिन के वक़्त कोई नहीं खाता, इसी लिए बच्चे को आप के ग़ैर मुस्लिम होने का शुबा हुवा । बराहे करम ! आप इस कि ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दीजिए । ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْه ने आ़लमे जोश में फ़रमाया : बच्चों की ज़बान, ग़ैबी ज़बान होती है । फिर क़सम खाई कि अब कभी खजूर खाने का नाम न लूंगा ।(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْه के इस ख़ूबसूरत वाक़िए़ में हमारे लिए सीखने की 2 बातें हैं :

(1) पेहले के मुसलमानों की रोजे़ से मह़ब्बत

पेहले नम्बर पर येह देखिए कि पेहले के मुसलमान रोज़ों से किस क़दर मह़ब्बत किया करते थे, माहे रमज़ान के इ़लावा और दिनों में भी पूरे मह़ल्ले में रमज़ान जैसा समां होता था, यहां तक कि नन्हे बच्चे ने येह समझ लिया कि शायद दिन के वक़्त खाना (यानी नफ़्ल रोजे़ न रखना) ग़ैर मुस्लिमों की पेहचान है । अफ़्सोस ! अब ह़ालात बिल्कुल उलट हैं, कितने ऐसे ग़ाफ़िल हैं जो बिग़ैर शरई मजबूरी के रमज़ानुल मुबारक के अव्वल तो फ़र्ज़ रोजे़ नहीं रखते, येह कबीरा गुनाह, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है फिर चोरी पर सीना ज़ोरी यूं करते हैं कि ❖ रोज़ादारों के सामने ही खाते पीते हैं ❖ सिगरेट के कश लगा रहे होते हैं ❖ पान चबा रहे होते हैं ❖ ह़त्ता कि बाज़ तो इतने बेबाक हैं कि सरे आ़म पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शर्माते । **अल्लाह** पाक हमें माहे रमज़ानुल मुबारक की बे क़द्री से मह़फ़ूज़ फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

1…तज़्किरतुल औलिया, सफ़्ह़ा : 33, खुलासतन

माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं

याद रखिए ! माहे रमज़ान के दो, चार या दस नहीं बल्कि पूरे माह के रोज़े रखना हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ पर फ़र्ज़ है। कुरआने करीम में है :

يَا يُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ (پارہ: ۲، سورۂ بقرہ: ۱۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसे तुम से पेहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

देखिए ! इस आयते करीमा में साफ़ फ़रमा दिया गया कि तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं, लिहाज़ा शरई मजबूरी के बिग़ैर रमज़ानुल मुबारक का एक भी रोज़ा छोड़ देना गुनाहे कबीरा[1] और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। **किताबुल कबाइर** में है : जो शख़्स बिग़ैर किसी मरज़ और उ़ज़्र के माहे रमज़ान का रोज़ा तर्क कर दे, वोह ज़िनाकार, भत्ता ख़ोर और आ़दी शराबी से भी बदतर है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े के फ़ाएदे और सवाबात

कुरआने करीम और अह़ादीस में रोज़ा रखने के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं, मसलन ❖ रोज़े रखने वाले और रोज़े रखने वालियों के लिए **अल्लाह** पाक ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।[3] ❖ ह़दीसे पाक में

1...رسائل ابن نجیم، الرسالۃ الثالثۃ والثلاثون فی بیان الکبائر والصغائر، صفحہ:۳۵۳

2...الکبائر، الکبیرۃ العاشرۃ افطار رمضان بلا عذر ولا رخصۃ، صفحہ:۵۵

3...पारह : 22, सूरए अह़ज़ाब : 35

है : जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस से सिर्फ़ रोज़ादार ही दाख़िल होंगे ।[1] ❖ माहे रमज़ान का रोज़ा साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा है ।[2] ❖ रोज़ा जहन्नम से बचाव के लिए मज़बूत क़ल्आ़ है ।[3] ❖ रोज़ा क़ियामत के दिन रोज़ादार की शफ़ाअ़त करेगा ।[4] ❖ माहे रमज़ान का एक भी रोज़ा ख़ामोशी और सुकून से रखने वाले कि लिए जन्नत में सब्ज़ ज़बरजद या सुर्ख़ याक़ूत का घर बनाया जाएगा ।[5] ❖ रोज़ेदार का सो जाना इ़बादत और उस की ख़ामोशी तस्बीह़ शुमार होती है ।[6] ❖ वक़्ते इफ़्त़ार रोज़ादार की दुआ़ रद्द नहीं की जाती ।[7] ❖ रोज़ा रखने से सेह़त मिलती है ।[8] ❖ अगर रोज़ादार لَآاِلٰہَ اِلَّا اللہُ या سُبۡحٰنَ اللہ या اَللہُ اَکۡبَرُ पढ़ता है, तो 70 हज़ार फ़िरिश्ते सूरज डूबने तक इस का सवाब लिखते रेहते हैं ।[9]

سُبۡحٰنَ اللہ **प्यारे इस्लामी भाइयो** ! अन्दाज़ा लगाइए ! रोज़ा रखने की कैसी बरकतें हैं ! मुसलमानों की एक तादाद है जो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखते, कोई मौसम का बहाना बनाता है कि गर्मी बहुत है, इस लिए रोज़े रखे नहीं जाते । किसी को कमाने की फ़िक्र है, कोई केहता है : रिज़्क़े ह़लाल

1... بخاری، کتاب الصوم، باب الریان للصائمین، صفحہ: ۵۰۲، حدیث: ۱۸۹۶ ملتقطاً

2... صحیح ابن حبان، کتاب الصوم، باب فضل رمضان، صفحہ: ۹۵۷، حدیث: ۳۴۳۳ ملتقطاً

3... شعب الایمان، باب فی الصیام، جلد: ۳، صفحہ: ۲۸۹، حدیث: ۳۵۷۱

4... مستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب الصیام والقرآن، جلد: ۲، صفحہ: ۲۵۵، حدیث: ۲۰۸۰

5... معجم اوسط، جلد: ا صفحہ: ۴۷۹، حدیث: ۱۷۶۸

6... شعب الایمان، باب فی الصیام، جلد: ۳ صفحہ: ۴۱۵، حدیث: ۳۹۳۸

7... شعب الایمان، باب فی الصیام، جلد: ۳ صفحہ: ۴۰۷، حدیث: ۳۹۰۳

8... معجم اوسط، جلد: ۶، صفحہ: ۱۴۷، حدیث: ۸۳۱۲

9... شعب الایمان، باب فی الصیام، جلد: ۳، صفحہ: ۲۹۹، حدیث: ۳۵۹۱

भी तो इ़बादत है, रोज़ा रख लेंगे तो काम नहीं हो पाएगा, काम नहीं होगा, तो बच्चों को कहां से खिलाएंगे ? वग़ैरा वग़ैरा । आज दिल की तसल्ली के लिए शायद येह बहाने काम कर रहे होंगे मगर रोज़े क़ियामत क्या बनेगा ? रोज़े क़ियामत ह़श्र के मैदान मैं कैसी गर्मी होगी ! सूरज एक मील पर रेह कर आग बरसा रहा होगा, तांबे (Copper) की दहकती हुई ज़मीन होगा, दिमाग़ खौल रहे होंगे, पसीना बेह रहा होगा, किसी के घुटनों तक पसीना होगा, किसी की पीठ तक पसीना होगा, कोई सीने तक अपने ही पसीने में डूबा हुवा होगा और कोई तो अपने ही पसीने में ग़ोते खा रहा होगा, इस शिद्दत की गर्मी में रोज़ेदारों के اِنْ شَآءَاللّٰہ मज़े ही मज़े होंगे ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

(2) नफ़्स कुशी की फ़ज़ीलत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हम ने ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का वाक़िआ़ सुना, ज़रा ग़ौर फ़रमाइए ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे नफ़्स को किस त़रह़ मारते थे, ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने नफ़्स की ख़्वाहिश को रोकने के लिए 40 साल तक खजूर न खाई फिर 40 साल के बाद खजूर खाने का इरादा भी फ़रमाया, तो नफ़्स से फ़ीस वुसूल करते हुवे पेहले एक हफ़्ता नफ़्ल रोज़े रखे ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की नफ़्स कुशी के क्या केहने ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बरसों तक कोई लज़ीज़ चीज़ नहीं खाते थे, उ़मूमन दिन को रोज़ादार रेह कर खुश्क रोटी से इफ़्त़ार का मामूल था । एक बार नफ़्स की ख़्वाहिश पर गोश्त ख़रीदा और ले कर चले, रास्ते में सूंघा और फ़रमाया : ऐ नफ़्स ! गोश्त की खुश्बू सूंघने में भी तो लुत़्फ़ है ! बस इस से ज़ियादा इस में तेरा ह़िस्सा नहीं । येह केह कर वोह गोश्त एक फ़क़ीर को दे दिया । फिर

फ़रमाया : ऐ नफ़्स ! मैं किसी अ़दावत के बाइ़स तुझे अज़िय्यत नहीं देता, मैं तो सिर्फ़ इस लिए तुझे सब्र का आ़दी बना रहा हूं कि रिज़ाए इलाही की ला ज़वाल दौलत नसीब हो जाए।[1]

तज़्किय्ए नफ़्स की फ़ज़ीलत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तज़्कियए नफ़्स यानी नफ़्स को सुधारना, उसे बुरे अ़क़ाइद से बचा कर अच्छे और दुरुस्त इस्लामी अ़क़ाइद का पाबन्द बनाना, बुरी आ़दतें छुड़ा कर अच्छी बातों का आ़दी बनाना, गुनाह छुड़ा कर इ़बादत पर लगा देना, बातिनी बीमारियों मसलन, रियाकारी, ख़ुद पसन्दी, ह़सद, तकब्बुर, दुन्या की मह़ब्बत, ह़िर्स व बुख़्ल वग़ैरा से नफ़्स को पाक करना बहुत ही फ़ज़ीलत वाला काम है। क़ुरआने करीम में है :

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿۷۶﴾

(پ۱۶، طٰہٰ:۷۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हमेशा रेहने के बाग़ात हैं, जिन के नीचे नहरें जारी हैं, हमेशा उन में रहेंगे और येह उस की जज़ा है जो पाक हुवा।

अल्लाह अल्लाह ! मालूम हुवा : जो ईमान और नेक आमाल के ज़रीए नफ़्स को पाक साफ़ करे, अच्छे अख़्लाक़, अच्छी आ़दात का आ़दी बनाए, उस के लिए जन्नत के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें रवां होंगी।

तज़्किय्ए नफ़्स, बे'सत का बुन्यादी मक़्सद है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे आक़ा व मौला, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ लाए, आप की तशरीफ़ आवरी के बुन्यादी मक़ासिद में से एक मक़्सद तज़्कियए नफ़्स भी है। **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में फ़रमाता है :

1...तज़्किरतुल औलिया, सफ़ह़ा : 33

كَمَاۤ اَرْسَلْنَا فِیْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ یَتْلُوْا عَلَیْكُمْ اٰیٰتِنَا وَ یُزَكِّیْكُمْ

(پ۲، البقرۃ:۱۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जैसे हम ने तुम में भेजा एक रसूल तुम में से कि तुम पर हमारी आयतें तिलावत फ़रमाता है और तुम्हें पाक करता।

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस्मानी, क़ल्बी, रूह़ानी ख़यालात वग़ैरा की मुकम्मल पाकी को "**तज़्किया**" केहते हैं।(1) आयते करीमा का एक माना येह है कि ऐ लोगो ! हमारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे जिस्मों को ज़ाहिरी गन्दगियों से पाक फ़रमाते हैं कि तुम्हें पाकी के त़रीक़े सिखाते हैं और तुम्हारे दिलों को गन्दे अख़्लाक़ और उ़यूब से और ख़यालात को शिर्को कुफ़्र से साफ़ फ़रमाते हैं।(2)

काम्याबी का अस्ल मेयार

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे हां लोगों ने अपने अपने लिह़ाज़ से काम्याबी के मुख़्तलिफ़ मेयार मुक़र्रर कर रखे हैं। किसी के नज़्दीक मालदार हो जाना काम्याबी है, किसी के नज़्दीक शोहरत मिल जाना काम्याबी है, कोई मन्सब और ओ़हदा मिल जाने को काम्याबी ख़याल करता है, ग़रज़ ! हर एक ने काम्याबी के अ़लग अलग मेयार मुक़र्रर कर रखे हैं और हर कोई अपने मेयार के मुत़ाबिक़ काम्याबी के पीछे दौड़ता चला जा रहा है लेकिन अस्ल में काम्याबी का मेयार क्या है ? हमारा ख़ालिक़ व मालिक, हमारा प्यारा **अल्लाह** पाक जिस ने येह दुन्या बनाई, हमें पैदा किया, इस दुन्या में बसाया, उस रब्बे काएनात के हां काम्याबी का मेयार क्या है ? आइए ! क़ुरआनी

1...तफ़्सीरे नईमी, पारह : 1, सूरए बक़रह, ज़ेरे आयत : 129, जिल्द : 1, सफ़ह़ा : 739

2...तफ़्सीरे नईमी, पारह : 2, सूरए बक़रह, ज़ेरे आयत : 151, जिल्द : 2, सफ़ह़ा : 65

आयात सुनिए ! **अल्लाह** पाक ने पारह 30, सूरतुश्शम्स में 7 क़स्में ज़िक्र कर के फ़रमाया :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۟ۙ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۟ؕ (پارہ: ۳۰، سورۂ شمس: ۹-۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जिस ने नफ़्स को पाक कर लिया वोह काम्याब हो गया और बेशक जिस ने नफ़्स को गुनाहों में छुपा दिया वोह नाकाम हो गया।

मालूम हुवा : ❖ काम्याबी का मेयार इ़ज़्ज़त व शोहरत नहीं। ❖ काम्याबी का मेयार मालो दौलत, ऐ़शो इ़श्रत, ऊंचा मन्सब नहीं बल्कि काम्याबी का मेयार है तज़्कियए नफ़्स ! काम्याब है वोह शख़्स जिस ने अपने नफ़्स का तज़्किया किया, अपने नफ़्स को बुरे अ़क़ाइद, बुरे अख़्लाक़, बुरी आ़दात और बाति़नी अमराज़ से पाक कर लिया और जिस ने अपने नफ़्स को पाक न किया, वोह चाहे दुन्यवी एतिबार से कितनी ही बुलन्दी पर क्यूं न पहुंच जाए, वोह काम्याब नहीं, ह़क़ीक़त में नाकाम ही है।

बादशाह या ग़ुलामों का ग़ुलाम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बात बहुत आसान और समझ में आने वाली है, जो ग़ुलामी की ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा हो, वोह चाहे जितना भी पैसा कमा ले, जितने भी ऊंचे मन्सब पर पहुंच जाए, जब वोह है ग़ुलाम तो वोह ह़क़ीक़त में काम्याब नहीं केहला सकता, काम्याबी की इब्तिदा ही आज़ादी से होती है। अब भला सोचिए ! नफ़्स की ग़ुलामी से बढ़ कर और बुरी ग़ुलामी कौन सी हो सकती है ? एक नेक बुज़ुर्ग थे, किसी बादशाह ने उन्हें कहा : बाबा जी ! मांगो क्या मांगते हो ? नेक बुज़ुर्ग ने बड़ी बे नियाज़ी से फ़रमाया : मैं अपने ग़ुलामों के ग़ुलाम से कुछ नहीं मांगता। बादशाह बड़ा ह़ैरान हुवा ! तअ़ज्जुब से बोला : मैं और ग़ुलाम ! मैं तो बादशाह हूं। नेक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : तुम

ह़िर्स व हवस के ग़ुलाम हो, जबकि येह दोनों नफ़्सानी ख़्वाहिशात मेरी ग़ुलाम हैं, लिहाज़ा तुम मेरे ग़ुलामों के ग़ुलाम हो।

अस्ल और सब से बदतर ग़ुलामी येही है कि अदमी अपने नफ़्स का ग़ुलाम हो जाए, लिहाज़ा कोई चाहे पूरी दुन्या भी फ़त्ह़ कर ले, अगर उस ने अपने नफ़्स को फ़त्ह़ नहीं किया, ह़िर्स व हवस पर क़ाबू नहीं पाया, अपने अन्दर से ह़सद, तकब्बुर, ग़ुरूर और ख़ुद पसन्दी जैसे सांप बिच्छूओं को नहीं मारा, वोह काम्याब नहीं, ह़क़ीक़त में ग़ुलाम है।

अल्लाह पाक हमें नफ़्स की ग़ुलामी से आज़ादी नसीब फ़रमाए। काश ! हम नफ़्सो शैत़ान से बच कर सिर्फ़ व सिर्फ़ **अल्लाह** व रसूल की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर लें। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

नफ़्स का तज़्किया कैसे करें ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! तज़्किियए नफ़्स यानी (नफ़्से अम्मारा को सुधारना) बहुत ज़रूरी है, वरना येह ज़ालिम नफ़्स हमें इस दुन्या की फ़ानी लज़्ज़तों में फंसा कर, गुनाहों का आ़दी बना कर, ना फ़रमानी की राहों पर चला कर हमें जहन्नम की गेहरी खाई में गिरा देगा। इस लिए अभी मौक़अ़ है, हम दूसरों के ऐ़ब ढूंडने, दूसरों के अख़्लाक़ व किरादार में कीड़े निकालने की बजाए अपने आप पर तवज्जोह दें और ख़ुद को सुधारने की फ़िक्र में लग जाएं।

अफ़्ज़ल तरीन अ़मल

ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नफ़्स की मुख़ालफ़त अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है।[1]

1…कश्फ़ुल मह़जूब, स. 209

नफ़्स का ज़ोर तोड़ने का बेहतरीन मौसम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक का बड़ा करम है कि उस ने हम गुनहगारों को माहे रमज़ान की नेमत अ़ता फ़रमाई है, माहे रमज़ान नफ़्स का ज़ोर तोड़ने का बेहतरीन मौसम है, अगर हम सह़ीह़ मानों में रमज़ानुल मुबारक की क़द्र करें, जिस त़रह़ माहे रमज़ान गुज़ारना चाहिए, उसी त़रह़ गुज़रने में काम्याब हो जाएं, तो اِنْ شَآءَ الله नफ़्से अम्मारा (यानी बुराइयों पर उभारने वाले नफ़्स) का ज़ोर टूटेगा और **अल्लाह** पाक ने चाहा, तो बात़िन उजला उजला चमकदार हो जाएगा।

रमज़ानुल मुबारक कैसे गुज़ारना चाहिए ? ❖ ग़फ़्लत से बचते हुवे रमज़ान गुज़ारिए। ❖ कोशिश कीजिए कि माहे रमज़ान का लम्ह़ा लम्ह़ा किसी न किसी अन्दाज़ से इ़बादत में गुज़रे। कभी तिलावत हो, कभी ज़िक्रो दुरूद, पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ अदा हों, तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल भी न छूटने पाएं, चलते फिरते, उठते बैठते ज़बान ज़िक्रो दुरूद से तर रहे। ❖ दुआ़एं मांगने का महीना है, ख़ूब कसरत से दुआ़एं मांगिए, अपनी, अपने अहले ख़ाना की, अ़ज़ीज़ रिश्तेदारों बल्कि तमाम उम्मते मुस्लिमा की मग़फ़िरत की दुआ़एं कीजिए। नफ़्स का ज़ोर टूटे, शैत़ान से पीछा छूटे, दिल उजला उजला चमकदार हो जाए, नेकियों में दिल लगे, गुनाहों से नफ़रत हो जाए, **अल्लाह** पाक से येह ख़ैरातें मांगिए। ❖ सारे के सारे रोज़े रखिए। ❖ ख़ूब ज़ौक़ व शोक़ के साथ नमाज़े तरावीह़ वोह भी पूरी 20 रक्अ़त अदा कीजिए। ❖ ख़ूब दिल लगा कर कुरआने करीम की तिलावत कीजिए। ❖ बल्कि माहे रमज़ान नुज़ूले कुरआन का मुबारक महीना है, कुरआने करीम को समझने की भी कोशिश कीजिए, इस के लिए **तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान** पढ़िए। जदीद और बहुत आसान उर्दू ज़बान में लिखी गई बेहतरीन तफ़्सीर है, इस में आसान तर्जमए कुरआन **कन्ज़ुल इरफ़ान** भी

शामिल है । कुरआने करीम का लफ़्ज़ी तर्जमा सीखने, समझने के लिए **मारिफ़तुल कुरआन** पढ़िए । ❖ माहे रमज़ान की एक ख़ास इबादत **एतिकाफ़** कीजिए, اِنْ شَآءَ الله करम ही करम होगा ।

इजतिमाई एतिकाफ़ की तरग़ीब

ऐ आशिक़ाने रसूल ! एतिकाफ़ पुरानी इबादत है, पिछली उम्मतों में भी एतिकाफ़ की इबादत मौजूद थी । اَلْحَمْدُ لِله दावते इस्लामी के तहत भी इजतिमाई एतिकाफ़ होता है, आप से गुज़ारिश है कि आप भी पूरा माहे रमज़ान या कम अज़ कम आख़िरी अशरे के इजतिमाई एतिकाफ़ की निय्यत कर लीजिए, اِنْ شَآءَ الله माहे रमज़ानुल मुबारक में गुनाहों से बचने, नेकियां करने, नफ़्ल इबादात का शौक़ बढ़ने के साथ साथ बहुत सारा इल्मे दीन भी सीखने को मिलेगा ।

तज़्किय‌ए नफ़्स के 3 त़रीक़े

हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तज़्किय‌ए नफ़्स यानी नफ़्से अम्मारा का ज़ोर तोड़ने, इसे सुधारने के 3 बेहतरीन त़रीक़े इरशाद फ़रमाए हैं, अगर हम रमज़ानुल मुबारक में तज़्किय‌ए नफ़्स के येह 3 त़रीक़े खुद पर नाफ़िज़ कर लें, तो اِنْ شَآءَ الله नफ़्से अम्मारा सुधरेगा और **अल्लाह** पाक ने चाहा, तो बातिन की पाकीज़गी नसीब होगी । इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे उलमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने फ़रमाया : 3 चीज़ों की मदद से नफ़्से अम्मारा का ज़ोर तोड़ा जा सकता है : (1) ख़्वाहिशात से रुकना (2) नफ़्स पर इबादात का बोझ डालना (3) **अल्लाह** पाक से मदद मांगना ।[1]

1…मिन्हाजुल आबिदीन, सफ़्हा : 143, मुल्तक़तन

(1) ख़्वाहिशात से रुकना

नफ़्स की बड़ी बुराई येही है कि येह ख़्वाहिशात पालता है, अगर हम नफ़्स की ख़्वाहिशात पूरी करना बन्द कर दें, तो इस का ज़ोर ख़ुद ब ख़ुद टूट जाएगा।

नफ़्स की मुख़ालिफ़त किन कामों में की जाए ?

हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अगर काम्याबी चाहते हो, तो अपने रब्बे करीम की इत़ाअ़त में नफ़्स की मुख़ालिफ़त करो, अगर नफ़्स रब्बे करीम की इत़ाअ़त (यानी नेक आमाल) की ख़्वाहिश करे, तो ऐसी ख़्वाहिश पूरी कर दो और अगर रब्बे करीम की ना फ़रमानी की ख़्वाहिश करे, तो इस से रुक जाओ।[1]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

(2) नफ़्स पर इ़बादत का बोझ डालिए !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तज़्कियए नफ़्स के लिए दूसरी जो चीज़ बहुत ज़रूरी है, वोह येह है कि नफ़्स पर इ़बादत का बोझ डाल दिया जाए। नफ़्स फ़ित़रतन सुस्त और लज़्ज़त पसन्द है, येह इ़बादत पर माइल नहीं होगा, अलबत्ता हमें चाहिए कि हम नफ़्स की मुख़ालिफ़त करते हुवे इ़बादत पर कमर बस्ता हो जाएं। ❖ पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करें। ❖ इस के साथ साथ नवाफ़िल भी अदा करें। ❖ तहज्जुद भी पढ़ें। ❖ इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल भी पढ़ें। ❖ ज़िक्रो दुरूद भी करें। ❖ कसरत से तिलावत भी करें। ❖ ग़रज़ ! जितनी ज़ियादा हो सके बस इ़बादत की त़रफ़ लौ लगाए रखें, इब्तिदा में कुछ मुश्किल होगी फिर اِنۡ شَآءَ اللّٰہ आहिस्ता

1...الفتح الربانی، ص: ۱۶۰

आहिस्ता नफ़्स आ़दी हो जाएगा और इ़बादत में लज़्ज़त मिलना शुरूअ़ हो जाएगी फिर नफ़्स ख़ुद ही इ़बादत की त़रफ़ माइल रहेगा ।

नेक आमाल अपना लीजिए !

नफ़्स पर इ़बादत का बोझ डालने के लिए एक बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली वोह है जो दौरे ह़ाज़िर की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अ़त़ा फ़रमाई है, यानी **नेक आमाल** । इस्लामी भाइयों के 72 नेक आमाल हैं, इस्लामी बहनों के लिए 63, त़लबा के लिए 92 और छोटे बच्चों के लिए 40 । येह नेक आ़माल अपना लें, इस में बहुत सारी इ़बादात मिलेंगी, मसलन ❖ इस में एक नेक अ़मल पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ है । ❖ अच्छी अच्छी निय्यतें करने का नेक अ़मल है । ❖ इस में नवाफ़िल भी शामिल हैं । ❖ तिलावत ❖ ज़िक्रो दुरूद ❖ मुख़्तलिफ़ सुन्नतें ❖ सलीक़ा शिआ़री ❖ मुख़्तलिफ़ आदाब वग़ैरा बहुत कुछ है । अगर हम येह नेक आमाल ख़ुद पर नाफ़िज़ कर लें, तो اِنْ شَآءَ الله बड़ी आसानी से नफ़्से अम्मारा का ज़ोर तोड़ने, इसे सुधारने में काम्याब हो जाएंगे ।

नेक अ़मल नम्बर 24 की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने नफ़्स को नेकियों का आ़दी बनाने और गुनाहों से बचाने के लिए दावते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो जाइए और 12 दीनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिए, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और नेक आमाल पर अ़मल करें, तज़्कियए नफ़्स करने के लिए हमें चाहिए कि हम ख़ुद भी नेक अ़मल करें और दूसरों को भी नेकी की दावत दें, जब हम दूसरों को नेकी की दावत देंगे, तो हमारा नफ़्स ख़ुद नेकी की त़रफ़ माइल होगा । शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **“72**

नेक आमाल'' में से एक **नेक अ़मल नम्बर 24** येह है कि क्या आज आप ने कम अज़् कम एक दीनी दर्स (मस्जिद, दुकान, बाज़ार वग़ैरा जहां सहूलत हो) दिया या सुना ? इस नेक अ़मल पर अ़मल करने की बरकत येह होगी कि जब हम दूसरों को नेकी की दावत देंगे, तो ख़ुद भी नेक अ़मल करने वाले बन जाएंगे । **अल्लाह** पाक हमें नेक आ़माल पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن

(3) अल्लाह पाक से मदद मांगते रहिए !

तज़्किय‌ए नफ़्स के लिए सब से अहम बात जो बहुत ज़ियादा ज़रूरी है, वोह येह कि **अल्लाह** पाक से दुआ़ मांगना हरगिज़ न भूलें क्यूंकि नफ़्से अम्मारा बहुत सरकश दुश्मन है, शैत़ान जो राह भटकने से पेहले बहुत बड़ा आ़लिम और इ़बादत गुज़ार था और इन्तिहाई चालाक और मक्कार भी है, नफ़्से अम्मारा से वोह भी मुक़ाबला न कर पाया, इस बद बख़्त को भी नफ़्से अम्मारा ही ने भटका कर हमेशा के लिए काफ़िर व ना मुराद कर दिया, तो सोचिए ! हम नफ़्से अम्मारा का मुक़ाबला कैसे कर पाएंगे । लिहाज़ा **अल्लाह** पाक की मदद शामिले ह़ाल होगी, तो ही नफ़्से अम्मारा से रिहाई मिल सकेगी । **अल्लाह** पाक के नबी ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का येह ख़ूबसूरत फ़रमान क़ुरआने करीम में भी मौजूद है । आप ने फ़रमाया :

اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ ؕ (پارہ:۱۳،سورۂ یوسف:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है मगर जिस पर मेरा रब रह़म करे ।

यानी नफ़्से अम्मारा बुराई का बहुत हुक्म देने वाला है, इस के शर से बचता वोही है जिस पर **अल्लाह** पाक का रह़म व फ़ज़्ल होता है ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

शोबा मद्रसतुल मदीना बालिग़ान

आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी इन्डिया कई शोबाजात में नेकी की दावत आ़म कर रही है, इन्ही में से एक शोबा **"मद्रसतुल मदीना बालिग़ान"** भी है । मद्रसतुल मदीना बालिग़ान मुख़्तलिफ़ मक़ामात जैसे मसाजिद, तालीमी इदारों, मार्कीटों और घरों वग़ैरा में लगाए जाते हैं । मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में बालिग़ यानी बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाइयों को मुख़्तलिफ़ अवक़ात में दुरुस्त मख़ारिज की अदाएगी के साथ मदनी क़ाइदा और कु़रआने करीम **फ़ी सबीलिल्लाह** पढ़ाया जाता है । मद्रसतुल मदीना बालिग़ान बराए मस्जिद का जदवल कमो बेश 45 मिनट है जबकि मद्रसतुल मदीना बालिग़ान बराए मार्कीट का जदवल कमो बेश 35 मिनट है । मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में मदनी दर्स देना, किताब **"नमाज़ के अह़काम"** से नमाज़, ग़ुस्ल, वुज़ू, नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा सिखाना, सुन्नतें और आदाब सिखाना और आख़िर में नेक आमाल के रिसाले से **"जाइज़ा"** लेना भी शामिल है । आइए ! निय्यत करते हैं कि तालीमे कु़रआन ह़ासिल करने के लिए मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में ख़ुद भी शिर्कत करेंगे और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाएंगे । اِنْ شَآءَاللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इ़ल्म सीखने वाले के लिए मदनी फूल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइए ! इ़ल्म सीखने वाले के बारे में चन्द मदनी फूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं । पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) फ़रमाया : जो आदमी इ़ल्म की तलाश करने के लिए किसी रास्ते पर चले, **अल्लाह** पाक उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है ।(1) (2) फ़रमाया : जो शख़्स इ़ल्म की त़लब

1...مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن وعلی الذکر، ص۱۱۱۰، حدیث:۲۸۵۳

में घर से निकलता है, फ़िरिश्ते उस के इस अ़मल से खुश हो कर उस के लिए अपने पर बिछा देते हैं।[1] ❖ इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए सफ़र करना बुज़ुर्गाने दीन की सुन्नत है।[2] ❖ इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए सुवाल करना यक़ीनन बाइ़से फ़ज़ीलत है लेकिन सुवाल करने के आदाब का लिह़ाज़ करना भी ज़रूरी है।[3] ❖ इ़ल्म ख़ज़ाना है और सुवाल करना इस की चाबी है।[4] ❖ इ़ल्म सीखने के लिए सुवाल पूछने से शर्माना नहीं चाहिए।[5] ❖ खुशामद करना मोमिन के अख़्लाक़ में से नहीं है मगर इ़ल्म ह़ासिल करने के लिए खुशामद कर सकता है।[6] ❖ ऐसे सुवालात करने से भी बचा जाए जिस का दुन्यावी या उख़रवी फ़ाएदा न हो।[7]

मुख़्तलिफ़ सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, हिस्सा 16 और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का 91 सफ़ह़ात का रिसाला "**550 सुन्नतें और आदाब**" ख़रीद फ़रमाइए और पढ़िए, सुन्नतें सीखने का एक बेतरीन ज़रीआ़ दावते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

उल्फ़ते मुस्त़फ़ा और ख़ौफ़े ख़ुदा चाहिए गर तुम्हें क़ाफ़िले में चलो
इ़ल्म ह़ासिल करो, जहल ज़ाइल करो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 669 मुल्तक़त़न)

1...طبرانی کبیر، ۸/۵۵، حدیث: ۷۳۵۰

2...40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा, स. 23

3...फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 13

4...الفردوس بماثور الخطاب، ۲/۸۰، حدیث: ۴۰۱۱

5...आराबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा के जवाबात, स. 8

6...شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۲۴، حدیث: ۴۸۶۳

7...आराबी के सुवालात और अ़रबी आक़ा के जवाबात, स. 9

अल्लाह पाक हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

एलान

इ़ल्म सीखने वाले के बक़िय्या मदनी फूल तरबियती ह़ल्क़ों में बयान किए जाएंगे, लिहाज़ा इन को जानने के लिए तरबियती ह़ल्क़ों में ज़रूर शिर्कत कीजिए ।

याद दहानी

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ① **अल्लाह** पाक हर शबे जुम्अ़ा (यानी जुमेरात और जुम्अ़ा की दरमियानी रात) इब्तिदा से आख़िर तक आसमाने दुन्या की त़रफ़ ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्ते को हुक्म देता है जो येह एलान करता है **:** है कोई मांगने वाला ? मैं उसे दूं । है कोई तौबा करने वाला ? मैं उस की तौबा क़बूल करूं । है कोई मग़फ़िरत चाहने वाला ? मैं उसे बख़्श दूं ।[1] ② जो शख़्स जुम्अ़ा के दिन नमाज़े फ़ज्र से पेहले तीन मरतबा **:** أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِی لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَیَّ الْقَیُّومَ وَأَتُوبُ إِلَیْهِ पढ़े, उस के गुनाह बख़्श दिए जाएंगे, अगर्चे समुन्दर के झाग से ज़ियादा हों ।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआ़एं

﴾1﴿ शबे जुम्अ़ा का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

1...کنز العمال، ۱۴/ ۸۰، حدیث: ۳۸۲۹۳

2...عمل الیوم و اللیلۃ لابن السنی، ص۲۹، حدیث: ۸۳

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ (जुमुआ और जुमेरात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा, मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।**[1]

﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّم

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पेहले और बैठा था, तो खड़े होने से पेहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे ।**[2]

﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े :

صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है, तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं ।**[3]

﴾4﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिए **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ।**[4]

1...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ السادسۃ والخمسون، ص ۱۵۱ ملخصًا

2...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الحادیۃ عشرۃ، ص ۶۵

3...القول البدیع، الباب الثانی، ص ۲۷۷

4...الترغیب والترہیب ج ۲ ص ۳۲۹، حدیث ۳۱

﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बाज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है।(1)

﴾6﴿ क़ुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया, तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُم को हैरत हुई कि **येह कौन बड़े मर्तबे वाला है!** जब वोह चला गया, तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो यूं पढ़ता है।(2)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिए **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं।**(3)

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा, तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली।(4) दुआ़ येह है :

1...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الثانیۃ والخمسون، ص۱۴۹

2...اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵

3...مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی کیفیۃ الصلاۃ...الخ، ۱۰/۲۵۴، حدیث: ۱۷۳۰۵

4...تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(यानी ह़िल्म और करम फ़रमाने वाले **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** पाक है, सात आसमानों और अ़ज़मत वाले अ़र्श का रब ।)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد